Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

भारत में जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव:- समस्या एवं समाधान

पूर्णिमा कुमारी
अर्थशास्त्र, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल, विश्वविद्यालय, धनबाद झारखंड |

Article Info
Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number : 110-111
Article History
Received : 02 Dec 2023
Published : 21 Dec 2023

अमूर्त

जलवायु में परिवर्तन का कृषि से अटूट संबंध है क्योंकि कृषि आज भी मूलभूत रूप से मौसम पर निर्भर है, इसलिए मौसम में बढ़ते परिवर्तनों का सबसे पहले नकारात्मक प्रभाव कृषि पर ही पड़ रहा है।

कीवर्ड:- जलवायु परिवर्तन, कृषि

परिचय

कृषि तथा कृषि गतिविधियों को जलवायु परिवर्तन प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावित करता है, इसके कारण फसलों की पैदावार घट जाती है। खाद्य आपूर्ति से लेकर खाद्यान्न सुरक्षा करना कठिन होता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि में उत्पन्न समस्या/ कृषि उत्पादन में गिरावट। ग्लोबल वार्मिंग ने वैश्विक कृषि को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। जो की फसलों के उत्पादन को प्रभावित कर रही है। जैसा की अंतर सरकारी पैनल (आईपीसी) रिपोर्ट में कहा गया है कि विश्व भर में कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पूर्ण रूप से नकारात्मक होगा।

समस्या

- कृषि कार्य के लिए प्रयुक्त परिस्थितियों में कमी के कारण जलवायु परिवर्तन से सिंचाई की व्यवस्था में कमी भू -क्षरण, प्रदूषण और सूखे की समस्या से पृथ्वी की दो चौथाई भूमि अपनी गुणवत्ता को खोज रही या खो चुकी है।
- सामान्य से औसत तापमान में बढ़ोतरी के कारण गेहूं ,सरसों, जो, आलू जैसे फसलों के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि इन फसलों के उत्पादन के लिए कम तापमान की आवश्यकता होती है। औसत से अधिक तापमान बढ़ने के कारण ज्वार ,मक्का, धान आदि फसलों के उत्पादन में कमी हो गई है क्योंकि तापमान वृद्धि से फसलों विकास नहीं हो पा रहा है या निर्माण की मात्रा कम हो रही है।
- वर्षा के पैटर्न में उतार-चढ़ाव के कारण भी भारत जैसे देश की कृषि जहां आज भी अधिकांश रूप से वर्षा जल पर ही आश्रित है। अधिक वर्षा से मिट्टी-क्षरण होता है, जिससे उपज वाली मिट्टी की कमी होती है, कम वर्षा के कारण सूखे का सामना करना पड़ता है।
- ग्लोबल वार्मिंग के कारण वर्ष के पैटर्न भी प्रभावित हो रहे हैं, जिस कारण अनेक प्रकार के कीट तथा रोग उत्पन्न हो रहे हैं। 1970 ई के उपरांत ऐसा देखा जा रहा है कि दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण, पश्चिम में कीटों तथा रोगों में 0.9%, उप सहारा अफ्रीका में 0.7% है। कुछ फसलों को छोड़, फसलों के उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पूर्ण रूप से नकारात्मक ही है।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

उपाय

- सिंचाई के लिए वर्षा जल का उचित ढंग से प्रबंध करना, इसके लिए वाटरशेड, तालाब, पोखर आदि का निर्माण करना ताकि जल को संचित किया जा सके। नई कृषि तकनीक को प्रयोग में लाना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि आज भी भारत में पुरानी तकनीक से ही खेती होती है, इसलिए परंपरागत विधि के साथ आधुनिक विधि को मिलाकर कृषि कार्य करना अत्यंत आवश्यक है, जैसे ट्रैक्टर, टुल्लू पंप जनरेटर, बिजली से चलने वाले और भी अनेक उपकरण जो कृषि कार्य में प्रयोग के द्वारा फसलों के उत्पादन, रख-रखाव आदि में वृद्धि कर सके।
- कृषि उपज में वृद्धि के लिए जैविक तथा मिश्रित कृषि करना लाभदायक है। फिर रासायन के उपयोग से हरित गैसों का निर्माण होता है, और उनकी मात्रा में वृद्धि होती है। इसके विपरीत मिश्रित कृषि में अनेक प्रकार के फसलों को उपजाया जा सकता है। इस प्रकार उत्पादकता में वृद्धि तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम कर सकते हैं।
- भारत सरकार द्वारा जलवायु स्मार्ट कृषि के लिए अनुकूल स्थिति बनाने हेतु 2008 में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना जारी की गई। जिसमें आठ राष्ट्रीय एक्शन प्लान घोषित किया गया। उसे में से एक राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र के लिए ही है।
- राष्ट्रीय पहल के अंतर्गत राष्ट्रीय जलवायु पर अनुरूप कृषि द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने एक प्रोजेक्ट बनाया। इसके अंतर्गत चार प्रमुख अवयव है :-

    1. रणनीति अनुसंधान
    2. प्रौद्योगिकी प्रतिपादन
    3. प्रायोजित एवं प्रतियोगी अनुदान
    4. क्षमता निर्माण

निष्कर्ष

प्रकृति के साथ मित्रता करके हम जलवायु परिवर्तन में हो रही असमानता को धीरे-धीरे ही सही काम करने का एक दृढ़ प्रयास के रूप प्रयास कर सकते हैं क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादकता एक स्तंभ का कार्य करती है। खाद्य एवं कृषि संगठन ने एक रिपोर्ट में कहा कि 2050 तक संपूर्ण विश्व की जनसंख्या लगभग 9 अब हो जाएगी। इसलिए संपूर्ण मांग और पूर्ति के बीच के अंतर्गत कम करने के लिए अभी से ही प्रयास करना होगा। ताकि प्रकृति के संसाधन बर्बाद होने से बचाए जा सके तथा किसानों और कृषि को जलवायु के प्रति अनुकूलित बनाया जा सके।

संदर्भ सूची

1. विकिपीडिया, https://Wikipedia.com
2. https://www.drishtiias.com.>blog
3. https://www.krishajagat.org